साहित्य में मनोविज्ञान

(विशिष्ट बालक : विशिष्ट शिक्षा)

डॉ० ओकेन्द्र
डॉ० कुमकुम श्रीवास्तव

साहित्य में मनोविज्ञान

(विशिष्ट बालक : विशिष्ट शिक्षा)

सम्पादक

डॉ० ओकेन्द्र

डॉ० कुमकुम श्रीवास्तव

सह-सम्पादक

डॉ०(सुश्री) राणी बापू लोखंडे

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स

वी-508, गली नं.17, विजय पार्क,

दिल्ली-110053

मो. 08527460252, 09990236819

ईमेल: jtspublications@gmail.com

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स, दिल्ली

साहित्य में मनोविज्ञान

(विशिष्ट बालक : विशिष्ट शिक्षा)

सम्पादक
डॉ० ओकेन्द्र, डॉ० कुमकुम श्रीवास्तव
सह-सम्पादक डॉ०(सुश्री) राणी बापू लोखंडे

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन- फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक/ संपादक/ प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित शोध-पत्रों में निहित विचार तथा संदर्भों का संपूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है। संपादक/ प्रकाशक इसके लिए उत्तरदायी नहीं है।

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : २०२३
ISBN 978-93-5786-621-7

प्रकाशक
जे०टी०एस० पब्लिकेशन्स
वी-५०८, गली नं०१७, विजय पार्क, दिल्ली-११००५३
दूरभाष : ०८५२७ ४६०२५२, ०११-२२६११२२३
E-Mail : jtspublications@gmail.com
मूल्य : ६६५.०० रूपये

आवरण : प्रतिभा शर्मा, दिल्ली
मुद्रक : तरूण ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली

Sahitya Main Manovigyan (Vishisht Balak : Vishisht Shiksha) by
Dr. Okendra, Dr. Kumkum Srivastav, Co.-Editor Dr. Rani Bapu Lokhande

१७

साहित्य में मनोविज्ञान : नारी चरित्र के संदर्भ में

–प्रा॰ ऐश्वर्या राजन वाघमारे

'मनोविज्ञान' 'मन' संबंधी ज्ञान का प्रस्तोता है। मन अदृश्य, आचष्ठ, अस्पर्श, विवादास्पद और अनुमानित है। मन स्थिति का विश्लेषक–व्याख्याता मनुष्य का व्यवहार है। अतः मनोविज्ञान मनुष्य जीवन के व्यवहार का विश्लेषक है। सृष्टि के इतिहास में आदिम युग समाप्त होकर जब सभ्यता के सवरे चरण प्रथम बार धरती पर पड़े तब इस तथाकथित नवीनतम किंतु वस्तुतः प्राचीनतम शास्त्रो मनोविज्ञान को जन्म मिल गया। सुन्दरतम बुद्धिवादी मानव के सुखमय सामाजिक जीवन की आकांक्षा वश पर पराचर विश्लेषण ने मनोविज्ञान की आधारशिला रखी। मनोविज्ञान मनुष्य के मन के सब स्तरों का गहन अध्ययन करता है। स्वप्न का अध्ययन भी मनोविज्ञान का एक अंश है। अतः स्पष्ट है कि स्वप्न व्यक्ति के मन का अध्ययन करने वाला माध्यम है। धीरे–धीरे इस मनोविज्ञान ने साहित्य में प्रवेश किया तो स्वभावतः स्वप्न ने भी साहित्य में प्रवेश किया। सभ्यता के साथ–साथ मनुष्य का जीवन भी जटिल होता गया पाठक अब स्वयं को और साथ में अपने समाज को समझने की चेष्टा भी करना चाहता था। अतः उसकी मांग थी कि उसे पढ़ने के लिए कोई ऐसी चीज मिले जिसमें मात्र व्याख्या या किसी वस्तु का सतही वर्णन न होकर मन की अंतरंग गुत्थियों और इन गुत्थियों के निर्मित होने के कारणों का वर्णन हो।[1] फलस्वरूप लेखकों ने पाठकों के लिए साहित्य का चुनाव किया और इस प्रकार हिंदी साहित्य में मनोविज्ञान ने पदार्पण किया। अनेक उपन्यास हिंदी साहित्य में मनोविज्ञान से संबंधित है। अनेक लेखकों ने इस काल में मनोवैज्ञानिक उपन्यास लिखकर समाज और व्यक्ति के पारस्परिक

सहायक प्राध्यापक, (हिंदी विभाग), अनेकांत एजुकेशन सोसाइटी, तुलजाराम चतुरचंद महाविद्यालय, बारामती, जि. पुणे (महाराष्ट्र)

सापेक्षिक महत्व को स्वीकार कर मनोवैज्ञानिक उपन्यास की रचना हुई। वैसे तो प्रेमचंद काल में ही जैनेंद्र ने मनोवैज्ञानिक उपन्यासों का आरंभ कर दिया था। फ्राइड, एडलर, यूंग, स्टेकेल आदि मनोवैज्ञानिकों की विचारधाराओं पर आधारित व्यक्ति के अंतरंग संघर्ष का चित्रण मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में किया जाने लगा। इस धारा के प्रणेता जैनेंद्र को माना जाता है। इस काल में जैनेंद्र (त्यागपत्र 1937, सुखदा कल्याणी और विवर्त), इलाचंद्र जोशी (सन्यासी 1941, पर्दे की रानी 1941, प्रेत और छाया 1946, निर्वासित 1946, जहाज का पंछी 1955) अज्ञेय (शेखरःएक जीवनी 1941, दूसरा खंड 1944, नदी के द्वीप 1951, अपने अपने अजनबी), डॉ. देवराज (पथ की खोज, बाहर–भीतर, रोडे और पत्थर तथा अजय की डायरी) आदि मनोवैज्ञानिक उपन्यास है। इस धारा के नवीन रचनाओं में धर्मवीर भारती का गुनाहों का देवता, सूरज का सातवां घोड़ा आदि। प्रभाकर माचवे के तीन उपन्यास परंतु, द्वाभा, सांचा आदि। नरेश मेहता के डूबते मस्तूल,धूमकेतु,एक श्रुति आदि। सर्वेश्वरदयाल सक्सेना का सोया हुआ जल, भारत भूषण अग्रवाल का लौटती लहरों की बांसुरी और निर्मल वर्मा का वे दिन आदि उल्लेखनीय उपन्यास है।[2] इस प्रकार उपन्यास व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन का अध्ययन है। मनुष्य को समझने में जो जो पद्धतियां उपयोगी है उसमें मनोविज्ञान का समावेश सर्व प्रधान है। प्रवृत्तियों का ही नही उन प्रवृत्तियों की मूल प्रेरणाओं का भी अध्ययन करने में उपयोगी सिद्ध हुआ है। क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति को निरंतर छोटे–बड़े मानसिक संघर्षों से होकर गुजरना पड़ता है। उसके वास्तविक स्वरूप परिज्ञान के लिए मनोवैज्ञानिक अध्ययन आवश्यक है। अतः वर्तमान काल में उपन्यासों में मनोविज्ञान की उपेक्षा नहीं कर सकते।

"जीवन प्रतिपल परिवर्तित होने वाला है। उसके भूत, वर्तमान और भविष्य की दशाएं बहुत कुछ अज्ञेय है। ऐसे ही जीवन के स्वरूप को और उस जीवन के मध्य में विविध विकारों के आघातों को सहन करने वाली आंतरिक चेतना को जानना ही मनोवैज्ञानिक उपन्यासों का कार्य है। डॉ. देवराज के मत में–"आजकल के उपन्यासों का प्रमाण

वाक्य यह है कि जीवन व्यवस्थित रूप से सजी हुई दीपमालिका नहीं हैय वह तो ऐसा ज्योति–मंडल है, जो हमारी चेतना को आद्यंत अपने झीने और अर्थ– पारदर्शक आवरण से अच्छादित किए रहता है।"[3] इस आवरण को बेधकर उसके अंदर के रहस्यों को प्रकट करना मनोवैज्ञानिक उपन्यास का उद्देश्य होता है।

हेनरी बर्गसां ने जीवन–सत्ता को समय का सापेक्षित और निरंतर परिवर्तनशील माना है। उसके मत में जीवनसत्ता एक तरल मापन है, जिसका प्रत्येक अंश भूत में प्रलंबित और भविष्य में प्रक्षेपित है। इसका तात्पर्य यही है कि यद्यपि जीवन परिवर्तनशील है, तथापि भूत, वर्तमान और भविष्य में एक अविराम नैरन्तर्य है। अतः मनुष्य की परिवर्तनशील प्रकृति बिल्कुल यांत्रिक नहीं हैय पर सृजनशील, स्वतः स्फुर्त जीवनोत्पल है। मनुष्य के परिपूर्ण ज्ञान के लिए इस परिवर्तन पर ध्यान केंद्रित करते हुए उसके बाह्य और आंतरिक तत्त्वों का सापेक्ष अध्ययन करना आवश्यक है, और मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में यही किया जाता है।"[4]

नारी मनोविज्ञान :

आज का जीवन की जटिलताओं के कारण व्यक्ति में अकेलेपन की पीड़ा गहराने लगी है। विषम स्थितियों में मनुष्य अपने परिवेश से कभी–कभी अकस्मात पृथक हो जाता है। ऐसी स्थिति अक्सर महानगरीय जीवन में उत्पन्न होती है। महानगरीय जीवन की जटिलताएं व्यक्ति को अंतर्मुखी बना देती हैं। पारिवारिक विघटन से भी यह स्थिति आ रही है जिसमें व्यक्ति, अकेला होता जा रहा है। "समष्टि" के प्रति व्यक्ति की आस्था का कम होती हुई दिखाई दे रही है। इस अकेलेपन की स्थिति को स्त्री भी अनुभव कर रही है। महानगरीय जीवन की स्थितियों में, घर से दूर काम करने वाली स्त्री, परिवार से अलग होकर नितांत अकेली हो जाती है। अपने कार्य के दबाव एवं तनाव के कारण ऐसी स्त्रियां परिवार के मध्य भी स्वयं को अकेला ही अनुभव करती है। रिक्तता और एकाकीपन उसके जीवन को सुना करने लगता है। आज के परिवेश में पति और पत्नी दोनों ही

अपने अपने व्यक्तित्व को स्वतंत्रता रखना चाहते हैं। पुरुष की भांति स्त्री भी समाज में अपनी स्वायत्तता स्थापित करना चाहती है। रूढ़िवादी सामाजिक संस्कारों के प्रति अब नारी जागृत हो रही है। वह अपने व्यक्तित्व की स्थापना का पूर्ण प्रयास कर रहे हैं। महिला–कथाकारों ने नारी की स्वायत्तता को अनेक रूपों में चित्रित किया है। वह अपने जीवन में अपनी संगी साथियों के चयन में स्वतंत्र विचार रखना चाहती है। अब नारी अपने स्वतंत्र अस्तित्व के लिए समाज में आमूल परिवर्तन की कामना करती है। "नारी और पुरुष अपनी अपनी जगह पूर्णत्व की खोज में प्रयत्नशील है।किंतु खोज की हर दिशा उनके व्यक्तित्व को खंडित कर रही है। परंपरागत वर्णनाओं आज की नारी जैसे–जैसे मुक्त हो रही है उसके सम्मुख नई नई समस्या उभर कर आ रही है।" वह अपनी समस्याओं का सामना पूर्ण क्षमता से कर रही है। आर्थिक आत्मनिर्भरता और मानसिक स्वतंत्रता से अपने जीवन की गुत्थियों को स्वयं समझाने में समर्थ है।5आज स्त्री अपने व्यक्तित्व को पुरुषों के समक्ष पूर्ववत निछावर नहीं करती बल्कि अपने स्वतंत्र जीवन को जीने में विश्वास करती है। अनेक लेखक एवं लेखिकाओं ने उपन्यासों में बेबाक पन से चित्रित किया है। इस प्रकार महिला कथाकारों ने अपने उपन्यासों में नारी के संस्कारों से मुक्ति उसका आर्थिक स्वालंबन, उसका पत्नीत्व, मातृत्व उसके अहम के विविध पक्षों के चर्चा विभिन्न समस्या द्वारा समझाइए है। लेखिकाओं ने एक ओर एक पतिव्रता नारी की मनोविज्ञानता को समझाया वहीं दूसरी ओर एक असफल प्रेमिका, असफल पत्नी, वासना की भूखी नारी का मनोवैज्ञानिक चित्रण भी बड़ा सूक्ष्मता से किया। शशिप्रभा शास्त्री के "वीरान रास्ते और झरना" उषा प्रियंवदा के "रुकोगी नहीं राधिका" व निरुपमा सेवती के "बंटता हुआ आदमी" में देखा जा सकता है। हर नारी पात्र एक समस्या से घिरा पाया गया कहीं नारी सेक्स की भूखी पाई गई कहीं प्यार की तो कहीं विश्वास की शायद इसीलिए की नारी का विगत, आगत, अनागत इस पर आधारित है। नारी पुरुष संबंधों में मधुरता भी है तो कहीं कटुता भी निकटता भी है और दूरी भी। प्रेम संबंधों के टूट जाने पर टूटती नारी का भी चित्रण है और इसी स्थिति का साहस के साथ सामना करने की क्षमता भी है। इसी प्रकार जो विवाह सात जन्मों का संबंध माना जाता

था अब समझौता मात्र रह गया है दांपत्य संबंधों के खोखलेपन को बड़ी कुशलता से अपनी कृतियों में उजागर किया है।

नारी मनोविज्ञान के अर्थ को हम संक्षेप में चित्रित करे तो आर्थिक स्वतंत्रता के समर्थक एवं आर्थिक स्वतंत्रता के लिए संघर्षशील विवाह,यौन संबंध, प्रेम विवाह, विवाह विच्छेद जैसी समस्याओं में भी साहस से कदम आगे बढ़ाना एवं अपने जीवन शैली अधिकार तथा वर्चस्व की स्थिति में अपने को लाने की कोशिश करना यही बहुत बड़ा परिवर्तन आज की नारी में धीरे–धीरे आ रहा है और इस परिवर्तन में स्त्री का साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान है।

जगत की सृष्टि, स्थिति, क्रिया में प्रकृति ही कारण है। दूसरी ओर उसी सिद्धांत के अनुसार इस संसार में स्त्री ही माया मोह या प्रेम रज्जू से पुरुषों को बांधकर संसार के सब कार्यों का कारण बनती है। सृष्टि के विकास में नारी का बहुत बड़ा उत्तरदायित्व है। स्त्री को परिभाषित करते डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है– "पुरुष निसंग है स्त्री आशक्त है। पुरुषनिर्द्वन्द्व–स्त्री द्वन्दोमुखी है। पुरुष मुक्त है स्त्री बद्ध यथार्थ पुरुष योगी उदासिन और निर्जनवासी है। उसे निर्जन में रहना पसंद आता है। स्त्री पुरुष को योग से संसार की ओर उन्मुख कर कर्मशील बनाती है। स्त्रियों को मन के खण्ड–खंडों में विभम्त होना नहीं पड़ा है। वह पुरुष के समान नीचे से ऊपर तक एक अखंड है। इसी कारण उनके आचार व्यवहार आदि इतने मनोहर और इतने संपूर्ण है किसी कारण संशय के डोले में बैठे हुए मनुष्य के लिए स्त्रियां मरण धुवं है।"[6]

श्रीमती अमृता प्रीतम के वाक्यों में– "औरत जब किसी से प्यार करती है, कितना प्यार करती है।..... नीरे पूरब के कालिदास की शकुंतला ही नहीं बल्कि पश्चिम के हर्डी की टैस भी..... जब पानी के बरतन में अपने दोनों हाथ डालकर अपने प्यारे के हाथों से खेलती है और वह अपनी उंगलियां उसकी उंगलियों में डालकर पूछता है..... बताओ तो तुम्हारी कितनी उंगलियां है, और मेरी कितनी? तो वह कहती है–सभी तुम्हारी है।"[7]

"मनुष्य को संभलना और उसके सामाजिक जीवन एवं वैयक्तिक अंतःसत्ता की व्याख्या करना उपन्यास का ध्येय है। संपूर्ण मानवजाति में सामूहिक, देशीय और वैयक्तिक विशेषताओं के कारण जो अनंत वैविध्य है, उसका अध्ययन सचमुच रोचक विषय है। मानव–चरित्र में संकुलता विषमता और विविधता ना होती तो उसको समझना कितना ही सरल होता किंतु तब मनुष्य इतना रोचक प्राणी भी ना होता। सामाजिक तथा वैयक्तिक आधार पर इस वैविध्य का और वैवध्य के बीच की एकता को अध्ययन करना ही उपन्यास में चरित्र चित्रण ध्येय हैं।"[8] प्रत्येक पात्र का परिचय देने के बाद उसके अनुसार ही उसके चरित्र का विकास किया जाता है। ये विशेषताएं प्रस्तुत उपन्यास में ही होती है। "गतिशील चरित्र की सृष्टि ही कथा साहित्य की महत्ता की कसौटी है। साहित्य में जिस सौंदर्य की सृष्टि की जा सकती है अर्नाल्ड बैनेट के शब्दों में हम कह सकते हैं कि कथा साहित्य का मूलाधार चरित्र चित्रण ही है। पात्र तत्व की महत्ता हि चरित्र के कारण है। अन्यथा तो पात्र की वही स्थिति है जो भावशुन्य अनुभूतिशून्य सब परिस्थितियों में से एक सी रहने वाली प्रस्तर प्रतिमा की होती है। मनोवैज्ञानिक ग्रंथों में अधिकांशतः व्यक्तित्व के मनोवैज्ञानिक के अंतर्गत चरित्र की चर्चा हुई है।"[9]

जीवन का हर एक कार्य मन से निर्देशित होता है। और मन में उत्पन्न विचार का अध्ययन करना मनोविज्ञान का कार्य है। अतः आज के जनसाधारण को इस महत्वपूर्ण विज्ञान के विषय में जानकारी रखना आवश्यक है। फ्रायड से परिचय पाना आज के सर्व साधारण व्यक्तियों के लिए आवश्यक ही नहीं अपितु अनिवार्य समझा जा रहा है। कारण आज के समाज में उपस्थित विचित्र परिस्थितियों तथा नर नारियों के बनते बिगड़ते संबंधों को फ्रायड के सिद्धांतों के आलोक में सुगमता से समझा जा सकता है।"[10] "साहित्य और मनोविज्ञान का संबंध में साहित्य और मनोविज्ञान का संबंध स्पष्ट किया है। फ्रायड वैसे तो एक चिकित्सक था विशेषकर मनोचिकित्सक किंतु अपने प्रयोगों के आधार पर प्राप्त निष्कर्षों ने उसे क्रांतिकारी विचारक बना दिया। फ्राइड के विचारों ने कला के सभी क्षेत्रों को प्रभावित किया। साहित्य भी एक कला है। साहित्य भी फ्रायड के विचारों से अछूता न रह सका।

साहित्य के संबंध में फ्राइड की निजी मान्यताएं एवं धारणाएं थी उन्हें फ्राइड ने निर्भय व्यक्त किया।"[11] "साहित्य समाज का दर्पण और दीपक होता है। साहित्यकार युगीन समाज से प्रभावित होता है और वह साहित्य के बल पर तत्कालीन समाज को प्रभावित करता है। नारी भारतीय सभ्यता और साहित्य का केंद्र बिंदु रही है। संयमशील और मर्यादित नारी को ईश्वरीय अवतार मानते हुए उसको पूजनीय बताया है। रामचरितमानस के आदर्श नारी पात्र आज भी संपूर्ण विश्व के लिए प्रेरणास्त्रोत है। यशोदा के माध्यम से नारी के माता रूप का जो चित्र सूरदास ने खींचा है वह अपने आप में आनूठा है। समाज की उन्नति और प्रगति में नारी ने अपनी अहम भूमिका निभाई।

मनुस्मृति में वर्णित एक श्लोक–

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः ।।[12]

अर्थात जिस कुल में नारी की पूजा या सम्मान होता है उस कुल में देवताओं का भी निवास होता है। जिस कुल में नारी का तिरस्कार होता है उस कुल में की गई सभी क्रियाएं निष्फल होती है। वैदिक काल में नारी शक्ति एवं विद्या का स्वरूप मानी जाती थी। हिंदी काव्य में तो नारी वीरांगना, वात्सल्य की मूर्त,त्यागी, ममतामयी आदि विविध रूपों में देखने को मिलती है।

"तुलसीदास जी की रचनाओं को अगर हम देखे तो नारी संबंधी विविध विचारों का नारी की विशेषताओं का वर्णन हमें मिलता है। उनकी रचनाओं में उन्होंने नारी वर्ग को उतना ही सहभागी माना है जितना पुरुष वर्ग को। तुलसी के प्राचीन सांस्कृतिक आदर्शों पर आधारित नारी के स्वरूप को स्वीकार किया है। तुलसी ने नारी की विशेषताओं का बखान करते हुए नारी को पतिव्रत धर्म परिपूरित हृदय, त्याग, सेवा, ममता, चरित्र के रूप में देखा है।

गोस्वामी तुलसीदास के साहित्य की अगर हम बात करें तो उन्होंने नारी संवेदना को परखने के लिए उनके द्वारा रचित महाकाव्य

"रामचरितमानस" को आधार मनाया गया है। इस महान ग्रंथ रूपी मानव पर डुबकी लगाकर अवलोकन करने पर हमे नारी पात्रों की विभिन्न श्रेणियां दिखाई देती है। जहां तुलसीदास जी ने इस महाकाव्य में नारी को वंदनीय एवं पूजनीय बताया है। तुलसीदास ने मानव में नारी पात्रों की विभिन्न झांकी प्रस्तुत की है जिसमें भारतीय नारी के आदर्शों को युगो–युगो तक अनूप प्रमाणित करेंगे और आज हम इस बात से नकार नहीं सकते हैं कि तुलसीदास जी की सोच विचार,दर्शन और लोकप्रियता का ही सबसे बड़ा सम्मान और पुरस्कार है जो नारी की सबसे बड़ी विशेषता बनकर उभरा है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि नारी की स्थिति में परिवर्तन रामकाव्य में देखा जा सकता है। तुलसीदास ने सीता, अनुसया, कौशल्या, सुमित्रा, मंदोदरी, तारा, अहिल्या आदि नारी पात्रों के माध्यम से पतिव्रता, त्यागमयी, सहनशील एवं कर्तव्यपरायण आदि गुणों से विभूषित किया। वही सूरदास ने तो यशोदा को वात्सल्य की प्रतिमूर्ति एवं राधा को एकनिष्ठ प्रियसी के रूप में उभारा। छायावादी कवियों ने नारी को सहचरी, माता, देवी, आदि रूपों में देखा और उसकी महिमा का गुणगान किया।"[13]

जयशंकर प्रसाद ने तो बहुत ही सुंदर शब्दों में तो नारी को अनमोल स्थान दिया–

"नारी! तुम केवल श्रद्धा हो विश्वास रजत नग पग तल में।
पियूष स्त्रोत सी बहा करो जीवन के सुंदर समतल मैं।।"[14]

"साहित्य ने जीवन से प्रेरणा ग्रहण की है। जीवन का विकास मनोविकारओ पर आधारित है, और मनोविकार का आधार मनोविज्ञान है। मनोविज्ञान की स्थिति जीवन की अनेकानेक अभीव्यक्तियों में है।" "सोने को गला कर किसी भी सांचे में ढाला जा सकता है परंतु हीरे को नहीं उसे हम तोड़ सकते हैं गला नहीं सकते है। उसका कोई भी आभूषण हम अपनी सुविधानुसार नहीं बना सकते उसका हर खंड, हर

कण,अपने आप में मूल्य रखता है। उसी प्रकार नारी का भी अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है जो मूल्य रखता है।"[15]

निष्कर्ष : मनोविज्ञान साहित्य का आधार फलक तथा उसके मूल्यांकन का मनोवैज्ञानिक निष्कर्ष है। पर कुछ इन जिन्हें मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के आधार पर संपूर्ण साहित्य की व्याख्या नितांत असंगत है। यथा आज भ्रांतिवश मनोविश्लेषण को मनोविज्ञान का पर्याय समझा जा रहा है, मनोविज्ञान की दुहाई देकर आज मनोविश्लेषणवादी साहित्य को तृप्ति,दमन की प्रतिरक्षाक्रिया अथवा स्नायविक–विकार का परिणाम बता रहे हैं पर उनके द्वारा प्रस्तुत साहित्य के आंशिक रुग्ण रूप की झांकी उसका पूर्ण यथार्थ तो नहीं है। वह उदास भावनाओं का पूंजीभूत रूप भी है, वह जीवन के महासागर में उठी हुई उच्चतम तरंग भी है। वह जीवन का चरम विकास भी है। अतः साहित्य के विकृत सामान्य और अतिस्वप्न तीनों रूपों को दृष्टिपथ में रखकर उसकी व्याख्या की जानी चाहिए। संपूर्ण तथ्य के अनुसार हम यही कहेंगे कि साहित्य व मनोविज्ञान एक दूसरे की पूरक है साहित्य में मनोविज्ञान संपूर्णता समाया हुआ है। चरित्र एक साथी की तरह होता है या कह सकते हैं चरित्र एक अपनत्व का एहसास दिला देता है। चरित्र ही हमें अंतर्मन तक झकझोर रख देता है। उपन्यास में चरित्र का एक अपना महत्व है। चरित्र उपन्यास का मुख्य आधार फलक है। एक चरित्र कितना पाठक को अपने में बांधे रखता है। यही उपन्यास की उपलब्धि महत्ता कहलाती हैं। क्योंकि उपन्यास की ख्याति उसके चरित्र पर टिकी होती है इसीलिए चरित्र उपन्यास की आत्मा है। स्त्री कोमलता में जितनी 'गुलाब'है कठोरता में उतनी ही 'कठ' भी है। नारी सच में ईश्वर की इस संसार में अनमोल कृति है।

अगर हम संक्षेप में नारी के बारे में कहे तो नारी सर्वगुण संपन्नता को उजागर करती है और यही उसकी महानता सर्वगुण होने की विशेषता है। नारी अगर चाहे तो एक पुरुष को चलते राह से भटकने में मजबूर कर देती है और अगर वो चाहे तो भटकते पुरुष को एक सही रास्ता दिखाकर प्रगति की और बढ़ा देती है। नारी सचमुच महान है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

१. हिंदी के मनोविश्लेषणात्मक, कमलेश अग्रवाल,प्रकाशकः दीपक पब्लिकेशन, पृष्ठ संख्याः 01
२. अम्बेडकरवादी चिंतन और दलित उपन्यास,डॉ. प्रदीप सरवदे, प्रकाशकः शुभम पब्लिकेशन, कानपुर, संस्करण– 2018, पृष्ठ संख्या–53
३. हिंदी उपन्यास साहित्य का अध्ययन, डॉ. एस. एन. गणेशन,प्रकाशकः राजपाल एंड सन्स, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–276
४. वही, पृष्ठ संख्या–277
५. हिंदी के समकालीन महिला उपन्यास, डॉ. एम. वेकेंटेश्वर, प्रकाशकः अन्नपूर्णा प्रकाशन,कानपुर, पृष्ठ संख्या–36
६. हिंदी उपन्यासों में नारी,डॉ.शैली रस्तोगी,प्रकाशकः वि. भु. प्रकाशक, पृष्ठ संख्या–9
७. वही,पृष्ठ संख्या–295
८. हिंदी उपन्यास साहित्य का अध्ययन,डॉ. एस. एन. गणेशन, प्रकाशकः राजपल एंड सन्ज,नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–241
९. हिंदी साहित्य कोष, डॉ. धर्मवीर भारतीय, डॉ. व्रजेश्वर वर्मा, श्री राम स्वरुप चतुर्वेदी, डॉ. रघुवंश, प्रकाशकः संजोयक क्यां मंडल लिमिटेड. प्रथम संस्करण, पृष्ठ संख्या–448
१०. हिंदी उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन, डॉ. व्यंकटेश्वर, प्रकाशक– अन्न पूर्णा प्रकाशन, कानपुर, पृष्ठ संख्या–3
११. वही, पृष्ठ संख्याः 4
१२. http%//ignited.in
१३. https%//www.kangla.in
१४. कामायनी, जयशंकर प्रसाद,प्रकाशकः राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण, 1994, पृष्ठ संख्याः 57
१५. http%//www.sahchar.com